International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.169-174

कोविड–19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभावः एक समीक्षा

देवेन्द्र राज सिंह*

सार

इस शोधपत्र में कोविड–19 महामारी का भारत देश के परिपेक्ष में पड़ने वाले प्रभाव को प्रदर्शित किया गया है। पूरा विश्व इसके नकारात्मक प्रभाव से अछूता नहीं रहा, भारत भी अपने आप को इस की लहर से बचा न सका। देश का प्रत्येक पक्ष इसे प्रभावित हुआ है। कोविड–19 के नकारात्मक प्रभाव अधिक देखे गए, परंतु इस शोध पत्र में कुछ सकारात्मक पक्षों का भी विवेचन किया गया है। हमारे देश की अर्थव्यवस्था जिस गति से गिरी उसी गति से इसने वापस अपने विकास की गति को प्राप्त कर, अपने आप को संभालने में कामयाबी हासिल की है। V आकार की रिकवरी यही प्रदर्शित करती है। जिस हिसाब से संपूर्ण देशवासी संगठित होकर इस महामारी से लड़े हैं, पूरा विश्व यह देखकर अचंभित है। प्रस्तुत शोध पत्र में देश की क्षमता, देशवासियों की सहनशक्ति और विकास की ओर अग्रसर देश की इच्छाशक्ति को प्रदर्शित किया गया है। कोविड का सबसे ज्यादा असर असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों पर हुआ है, जिन्हें लॉकडाउन के दौरान सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलने के लिए बाध्य होना पड़ा। सरकार द्वारा घोषित आर्थिक पैकेज इन के लिए मरहम का कार्य करेगा, परंतु अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए कई ठोस कदम उठाने पड़ेंगे, जो कि एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

शब्दकोशः *महामारी, लॉकडाउन, अर्थव्यवस्था, अनौपचारिक क्षेत्र, मांग, पूर्ति, डिजिटल, ऑनलाइन, मंदी, बेरोजगार।*

प्रस्तावना

22 मार्च 2020 में प्रधानमंत्री द्वारा महामारी के परिपेक्ष में लॉक डाउन की घोषणा की गई। पूरा देश अपने–अपने घरों में कैद हो गया, रोजगार के सारे साधन एक साथ बंद हो गए, ऐसा शायद भारत के इतिहास में पहली बार देखा गया। देशवासी भी संगठित होकर प्रधानमंत्री की बात मानकर इस वैश्विक महामारी से लड़ने को तैयार हो गए। कोरोनावायरस न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था के लिए खतरा बन गया। विश्व बैंक आईएमएफ जैसी संस्थाओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गहरे आघात पहुंचने का संकेत दिया है। हमारी अर्थव्यवस्था में गरीबों की संख्या में इजाफा होने के संकेत मिलते हैं, क्योंकि रोजगार के सभी साधन बंद हो गए हैं। हमारे देश का श्रमिक जो कि असंगठित क्षेत्र से संबंधित है, सर्वाधिक प्रभावित हुआ है, हालांकि सरकार द्वारा आर्थिक पैकेज की घोषणा की गई, परंतु यह कोई स्थाई उपचार नहीं होगा। हमारी अर्थव्यवस्था को उबारने में जितने भी देश में बड़े–बड़े अर्थशास्त्री मौजूद हैं, उन्हें सम्मिलित रूप से प्रयास कर अर्थव्यवस्था को उबारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करना होगा। लाखों लोग बेरोजगार हो गए हैं, और विश्व भर में करोड़ों के सामने नौकरी खोने की आशंका है। कोविड–19 हेतु जो प्रयास किए गए उनसे हमारा औद्योगिक क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ है, लोगों के आय के स्रोत घट गए हैं, जिससे उनके खर्चे में कटौती हुई है, जो की अर्थव्यवस्था के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। विश्व बैंक के अनुसार कोविड–19 दौरान लगाए गए लोग

---

[6] शोधार्थी, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

डाउन का सर्वाधिक असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ेगा और जीडीपी का 50 प्रतिशत अनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है। बैंकों में एनपीए की समस्या और विकट होने वाली है। कोविड–19 का सर्वाधिक असर एविएशन, पर्यटन और होटल सेक्टर पर पड़ने वाला है।

कोविड–19 से भारतीय अर्थव्यवस्था में रिकॉर्ड नकारात्मक ग्रोथ दर्ज की गई। वित्त वर्ष 2020–21 की पहली तिमाही में विकास दर – 24 प्रतिशत रही, अकेला कृषि क्षेत्र ऐसा रहा, जिसमें सकारात्मक विकास दर रही, यानी एक तरह से भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद कृषि क्षेत्र ही साबित हुआ है। इस महामारी से ना केवल आर्थिक नजरिए में बड़े पैमाने पर बदलाव आया, बल्कि सरकार की प्राथमिकताएं और आम लोगों की खर्च और बचत करने की आदतें भी बदलती दिखाई दी। सरकार का मजबूत पक्ष यह रहा, कि राजकोषीय घाटे की बहुत ज्यादा परवाह ना कर सरकार ने खर्च को बनाए रखने और आर्थिक सुधार के कदमों को जारी रखा। अभी इस बात को सटीक तौर पर नहीं कहा जा सकता, कि सरकार अपने सुधार के उपायों को धरातल पर उतारने में कितना कामयाब रही है।

कोविड–19 एक ऐसी घटना रही है, जिसने मानव जाति को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि हर रूप में प्रभावित किया है। यह जितनी स्वास्थ्य तबाही रही है, उससे कहीं ज्यादा बड़ी आर्थिक तबाही के रूप में सामने आ रही है, दूसरी बात यह है की लॉकडाउन ने भारतीय अर्थव्यवस्था के मांग और पूर्ति के दोनों प्रारूपों को प्रभावित किया है। भारतीय अर्थव्यवस्था कोविड–19 के पहले ही एक मांग आधारित मंदी की तरफ जा चुकी थी, हर सेक्टर से उत्पादन में कटौती और रोजगार में कटौती की खबरें आ रही थी, कोविड–19 ने इस पूरी मंदी को मांग और आपूर्ति आधारित मंदी के रूप में बदल दिया। लॉकडाउन की वजह से लोगों का रोजगार चला गया और व्यापार बंद हो गए तो बाजार में मांग घट गई।

वहीं दूसरी तरफ जरूरी सेवाओं के अलावा सभी सेवाओं की आपूर्ति भी लंबे समय तक स्थिर रही, बाजार में मांग की कमी ने बेरोजगारी की समस्या को और बल दिया है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था बेरोजगारी गरीबी महंगाई और असमानता के एक भयावह चक्र में फंसी हुई है, यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। आने वाले वक्त में अगर रोजगार के नए अवसर नहीं उपलब्ध कराए गए, तो भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार महज ऊपर के 1 प्रतिशत लोगों तक ही सिमट कर रह जाएगा।

ऐसा नहीं है कि कोविड–19 के केवल नकारात्मक असर ही अर्थव्यवस्था पर पड़े, बल्कि कुछ सकारात्मक असर भी देखने को मिले हैं, जैसे अब पहले की तुलना में हमारा समाज तेजी से नकदविहीन की ओर अग्रसर होने लगा है। खरीददारी भी अब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से अधिक की जा रही है, इसके अलावा जरूरी सरकारी सेवाएं भी हमें डिजिटल माध्यम से प्राप्त हो रही है। प्राप्ति एवं भुगतान के विकल्प के रूप में हमारे सामने अनेक एप्लीकेशनें मौजूद हैं, जिनका उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। हमारी अर्थव्यवस्था पारदर्शी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो रही । शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक डिजिटाइजेशन देखने को मिल रहा है, अब सारी सामग्री शिक्षा से संबंधित हमें ऑनलाइन उपलब्ध हो जाती है। किसी भी समस्या का निराकरण तुरंत प्रभाव से ऑनलाइन माध्यम से हो जाता है। ऑनलाइन शिक्षा में विस्तार कोविड–19 के कारण ही संभव हो पाया है। मनोरंजन से लेकर शिक्षा ग्रहण करने तक के सभी कार्य अब डिजिटल हो गए हैं। वर्क फ्रॉम होम की संख्या में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। आजकल सभी मीटिंग वर्चुअल प्लेटफार्म पर आयोजित की जा रही है। जिससे समय व धन दोनों की बचत होती है। रेलवे की सुविधाओं में भी इजाफा देखने को मिला , अब टिकट खिड़की पर लगी लाइन में खड़े होने की आवश्यकता नहीं है। ई–टिकट के माध्यम से ही घर बैठे हम अपनी टिकट बुक करवा सकते हैं, और ट्रेन की वर्तमान स्थिति भी जान सकते हैं। यही नहीं, हम ट्रेन में खाने की बुकिंग तक ऑनलाइन कर सकते हैं, और आपात स्थिति होने पर प्लेटफार्म पर स्थित विश्रामालय कमरों की बुकिंग ऑनलाइन कर सकते हैं। यह सभी परिवर्तन कोविड–19 के कारण संभव हो पाया है। प्रदूषण का अपने न्यूनतम स्तर पर होना भी कोविड–19 दौरान लगाए गए लॉकडाउन का असर है, दिल्ली वालों ने पहली बार बहुत अरसे के बाद नीले आसमान के दर्शन किए हैं, तथा लुधियाना से हिमालय के दर्शन देखने को मिले, यह सब कोविड–19 के कारण ही संभव हो पाया है।

साहित्य पुनरावलोकन

(ILO,2020) अनौपचारिक क्षेत्र भारत में सबसे बड़ा रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र है और यह भारत के लगभग 81 प्रतिशत कार्यबल को अवशोषित करता है। बिना किसी सामाजिक सुरक्षा उपाय के, इस क्षेत्र के श्रमिक बुरी तरह प्रभावित हुए। अनौपचारिक क्षेत्र से संबंधित अधिकांश श्रमिकों को एक सख्त लॉकडाउन लागू करने की प्रक्रिया में बेरोजगार और आय के किसी भी स्रोत के बिना छोड़ दिया गया था। भारत में लगभग 400 मिलियन श्रमिक अपनी आजीविका खो सकते हैं और गरीबी में गिर सकते हैं।

(IMF,2020) कोविड–19 का फैलाव अब पूरी दुनिया के लिए एक नए मानवीय संकट में बदल गया है और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। इस संकट की भयावहता ऐसी है कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था को लगभग 4–5 प्रतिशत तक अनुबंधित कर सकता है।

(Niewiadomski,2020) कोविड–19 का प्रकोप जनवरी 2020 में चीन में शुरू हुआ और अगले कुछ महीनों में, यह दुनिया भर के अन्य देशों में तेजी से फैल गया। इसने एक बड़ा विश्वव्यापी संकट शुरू किया जिसने पर्यटन और यात्रा सहित सभी मानवीय गतिविधियों को प्रभावित किया।

उद्देश्य

- कोविड–19 का असर अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र पर जानना।
- वैश्विक महामारी से अर्थव्यवस्था को बचाने के उपाय जानना।
- कोविड–19 अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं की ओर ध्यान इंगित करना।
- महामारी में सरकार के प्रयास जान पाना।
- कोविड–19 का बेरोजगारी पर प्रभाव जानना।

अनुसंधान क्रियाविधि

इस शोधपत्र का अध्ययन, डाटा और सूचनाएं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, संबंधित पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और प्रासंगिक वेबसाइटों से भी सूचना और डाटा एकत्रित किए गए हैं।

कोविड–19 के अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

नकारात्मक प्रभाव

- **असंगठित क्षेत्र पर प्रभाव–** लॉकडाउन के कारण असंगठित क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ है, एक तरह से कहा जाए तो कोविड–19 का सर्वाधिक बुरा असर यदि किसी पर पड़ा है, तो वह असंगठित क्षेत्र ही है, जिनका जीवन रोजमर्रा के कामकाज से ही चलता है, अचानक उनके कामकाज ठप हो , किसी बुरे स्वप्न के समान ही है।
- **बेरोजगारी में वृद्धि–** लॉकडाउन लगने के कारण बहुत से लोगों को अपना रोजगार खोना पड़ा, हालांकि प्रधानमंत्री ने सभी उद्योगपतियों से अपील की है, कि किसी को भी रोजगार से ना निकाला जाए परंतु हकीकत यही है, कि बहुत से लोग बेरोजगार हो गए हैं, क्योंकि लोगों की मांग घट गई, जिसके कारण उद्योगों को अपना उत्पादन घटाना पड़ा, जिसका असर रोजगार पर देखने को मिला है।
- **गरीबी में वृद्धि–** विश्व बैंक ने अनुमान लगाया है, कि भारत में गरीबों की संख्या में वृद्धि होने वाली है, क्योंकि जो लोग गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन कर रहे थे, अचानक उनके रोजगार जाने से व कमाई के साधन बंद होने से उनकी आय का स्तर गिर गया है, जिससे वे भी गरीबी रेखा से नीचे आ गए हैं और गरीबों में वृद्धि हो रही है।
- **सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट–** 2020–21 के पहले तिमाही में विकास दर – 24 प्रतिशत रही, जिसका देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा आघात पहुंचा है। हालांकि हमारे देश में V आकार की रिकवरी दर्ज की गई है, परंतु जो आघात पहुंचा है उसको भरने में अभी लंबा समय लगने वाला है एकमात्र कृषि और ग्रामीण क्षेत्र को छोड़कर देश का प्रत्येक क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

- **मांग व पूर्ति पर प्रभाव–** हमारा देश लॉकडाउन से पहले ही मांग में कमी से जूझ रहा था, जिसको सुधारने के अनेक प्रयास सरकार द्वारा किए जा रहे थे, अचानक लॉकडाउन के कारण लोगों की आय कम हो गई और उनकी मांग पर जबरदस्त आघात पहुंचा, जिसके कारण उत्पादन में मांग के अनुरूप गिरावट कर पूर्ति में भी कमी दर्ज की गई, इसके कारण लोगों को अपने रोजगार से भी हाथ धोना पड़ा है। हमारा देश अब ऐसे चक्रव्यूह में फंस गया है, जिसमें लोगों की मांग को भी बरकरार रखना है और अर्थव्यवस्था को भी संभालना है। अब हमारे सामने दो धारी वाली अर्थव्यवस्था है, अगर हम एक क्षेत्र को संभालते हैं तो दूसरा क्षेत्र गर्त में चला जाता है, और दूसरे क्षेत्र को संभालते हैं तो पहला क्षेत्र डूब जाता है।
- **आयात पर प्रभाव–** कोविड–19 का पूरे विश्व पर प्रभाव देखने को मिला है। प्रत्येक देश का पहली बार एक दूसरे से संपर्क टूट गया है। लॉकडाउन ने वैश्वीकरण की परिभाषा ही बदल दी है। प्रत्येक देश एक–दूसरे पर निर्भर थे, परंतु कोविड–19 के कारण जरूरी सामान का भी आयात नहीं कर पा रहे हैं। उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।
- **निर्यात पर प्रभाव–** जिस प्रकार आयात पर प्रभाव पड़ा है, उसी प्रकार हमारे देश के निर्यात पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, निर्यात में भी गिरावट दर्ज की गई है।
- **पर्यटन उधोग पर प्रभाव–** कोविड–19 के कारण लोगों का एक दूसरे से संपर्क टूट गया, जिसके कारण पर्यटन क्षेत्र से जुड़े लोगों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ रहा है। पर्यटन पर कोविड–19 बुरा असर देखने को मिला है।
- **होटल उधोग पर प्रभाव–** होटल व्यवसाय अचानक मंदी का शिकार हुआ है, इससे जुड़े सभी व्यक्तियों पर इसका असर हुआ है, बहुत से कर्मचारियों को कार्य से निकाल दिया गया, होटल व्यवसाय को बहुत ही गहरा आघात पहुंचा है।
- **केटरिंग व्यवसाय पर प्रभाव–** कोविड–19 शादी समारोह पर पाबंदियां लगा दी गई, जिससे इस व्यवसाय से जुड़े देश के लाखों, करोड़ों लोग अचानक बेरोजगार हो गए, उनकी आय का जरिया एकदम समाप्त हो गया और वह भूखमरी की चपेट में आ गए हैं।
- **शिक्षा पर प्रभाव–** लॉकडाउन में सभी विद्यालयों को बंद कर दिया गया, ऑनलाइन शिक्षा पर जोर दिया गया, परंतु निजी महंगे विद्यालय तो गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन शिक्षा देने में तो सफल हुए, परंतु वे लोग जिनकी आय का स्तर बहुत कम , जिनके बच्चे छोटे निजी विद्यालयों में या सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करते हैं, वे लगभग पिछले 2 साल में कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए, उनकी उम्र में साल तो बड़े परंतु, उनका शैक्षिक स्तर शून्य हो गया है,जो कि एक गहरी चिंता का विषय बन गया है। यहां तक की महंगे विद्यालयों ने बच्चों को उचित शिक्षा सामग्री तो उपलब्ध करवा दी परंतु, घर पर उचित माहौल न मिलने से वे बच्चे भी उस सामग्री को उचित रूप में ग्रहण करने में निष्फल हुए हैं, और तो और घर में कैद रहने के कारण बच्चों की सृजनात्मक क्षमता में नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जिससे हमारे देश की नींव कमजोर होने का गहरा संकट सामने मंडरा रहा है।
- **मानसिक स्थिति पर प्रभाव–** हाल ही में हुए सर्वे के अनुसार कोविड–19 में लगे लॉकडाउन का प्रभाव लोगों की मानसिकता पर गहरा असर देखने को मिला है। बेरोजगार होने के कारण आमजन की मानसिक स्थिति नकारात्मक हो गई है। घरेलू हिंसा में भी इजाफा देखने में आया है।

सकारात्मक प्रभाव

- **नकदविहीन समाज की ओर अग्रसर–** प्रधानमंत्री द्वारा डिजिटल क्रांति का आगाज 2015 में किया गया, कोविड–19 के कारण आमजन अपनी गतिविधियों को अब ऑनलाइन माध्यम से ज्यादा करने लगे हैं। नगद विहीन लेनदेन की प्रवृत्ति अब ज्यादा दर्ज की गई है। लॉकडाउन के कारण बैंकों से संपर्क टूट गया, जिसके चलते अब ऑनलाइन पेमेंट में इजाफा दर्ज हुआ है।

- **डिजिटाइजेशन–** हमारे देश की अर्थव्यवस्था अब तेजी से डिजिटल हो रही है, सारे कार्य डिजिटल माध्यम से किए जा रहे हैं। सभी सरकारी कार्य अब डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आयोजित किए जा रहे हैं। आमजन से संबंधित सभी सरकारी विभाग की जानकारियां अब डिजिटल की जा रही है। आमजन शॉपिंग से लेकर लेनदेन तक सबकुछ डिजिटल माध्यम से अधिक कर रहे हैं।
- **शिक्षा में डिजिटाइजेशन–** कोविड का शिक्षा के क्षेत्र में जबरदस्त परिवर्तन देखने को मिला है, जो छात्र दूरदराज के दुर्गम स्थानों पर रहते हैं, जो अच्छी शिक्षण सामग्री से वंचित रहते थे, अब उन्हें भी गुणवत्तापूर्ण सामग्री सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही है। 12वीं तक की पाठ्यपुस्तक हमें ऑनलाइन उपलब्ध करवाई जा रही हैं। कोई भी पुस्तक हम ऑनलाइन देख सकते हैं, इसके अलावा विषय विशेषज्ञों द्वारा अनेकों वीडियो ऑनलाइन डाले जा रहे हैं। जिससे छात्र अपनी संबंधित समस्या का तुरंत निराकरण प्राप्त कर लेते हैं, इसके कारण छात्र का समय व धन दोनों बचते हैं।
- **चिकित्सा पर प्रभाव–** कोविड का सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव कहीं पर देखने को मिला है तो, वह चिकित्सा क्षेत्र की है। प्रत्येक अस्पताल में बेड की सुविधा, ऑक्सीजन की उपलब्धता, दवाइयों की उपलब्धता व वैक्सीनेशन कार्यक्रम बहुत दुरुस्त कर लिया गया है, तुरंत प्रभाव से सभी को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है।
- **शोध पर प्रभाव–** इस महामारी से निपटने में एक बात जो हमारे सामने आई वह यह है कि, जिस देश में शोध जितना अधिक होगा वह देश उतना जल्दी विकास पथ की ओर अग्रसर होगा, हमारे देश ने भी वायरस पर शोध कर वैक्सीन बनाने का अभूतपूर्व कार्य किया है, और सरकार भी यह समझने लगी है कि, शोध कार्य में वृद्धि बहुत जरूरी है, जिसके परिणाम स्वरूप अब शोध कार्य को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त बजट का प्रावधान किया जा रहा है।
- **वर्चुअल मीटिंग्स–** कोविड के कारण आमजन का एक दूसरे से संपर्क आए बगैर वर्चुअल माध्यम से मीटिंग करने लगे हैं जिससे वायरस के फैलाव को रोका जा सके इससे एक तो समय की बचत होती है दूसरा धन भी कम खर्च होता है
- **स्वच्छ भारत मिशन पर असर–** कोविड–19 में लोगों को बार–बार हाथ धोने की नसीहत दी जाती है, बाहर से आने पर अपने आप को पूर्ण रूप से वायरस मुक्त कर घर में प्रवेश करने के संदेश प्रचारित किए जा रहे हैं। आमजन भी अब स्वच्छता के प्रति बहुत ही जागरूक हुआ है। पहले सैनिटाइजर को हम लोग सिर्फ अस्पतालों में या डॉक्टरों की टेबल पर ही देखते थे, परंतु अब यह प्रत्येक घर में उपलब्ध होता है, इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि, आमजन अब सफाई के प्रति कितना जागरूक हो गया है।
- **म–टिकट–** बस, ट्रेन आदि की टिकटें अब ऑनलाइन ही बुक हो जाती है। पहले की तरह अब लंबी–लंबी लाइन में लगने की आवश्यकता नहीं है। कंप्यूटर वाले के पास जाकर टिकट बुक करवाने तक की झंझट से मुक्ति मिली है। अब सामान्य व्यक्ति भी अपने मोबाइल से टिकट बुक करने लगा है। ट्रेनों में तो खाना तक बुक किया जा सकता है। आईआरसीटीसी की वेबसाइट www.ecatering.irctc.co.in पर खाना बुक कर सकते हैं। यहां तक कि स्टेशनों पर स्थित विश्रामालयों में विश्राम हेतु रूम भी बुक किए जाते हैं। इन सब में सुधार कोविड–19 के कारण ही संभव हो पाया है।
- **पर्यावरण पर प्रभाव–** देश की राजधानी विश्व के टॉप 5 प्रदूषित शहरों में से एक है, परंतु लॉकडाउन के कारण पर्यावरण प्रदूषण इतना कम हुआ कि दिल्लीवासियों ने बहुत अरसे बाद स्वक्ष नीले आसमान के दर्शन किए, जो कि अपने आप में एक अकल्पनीय है। यहां तक कि लुधियाना से बहुत वर्षों पहले हिमालय की चोटी साफ नजर आती थी, परंतु प्रदूषण के कारण कई वर्षों से लोगों ने उसे देखा तक नहीं, नई पीढ़ी ने तो उसे देखने का अनुभव तक नहीं किया, परंतु लॉकडाउन के कारण स्वच्छ पर्यावरण में उन्हें उसे देखने की असीम अनुभूति प्राप्त हुई है। इससे पता चलता है कि, हमारा पर्यावरण कितना प्रदूषित हो चुका है और इसे स्वच्छ रखने में हमें बहुत अधिक प्रयास करने होंगे।

सुझाव

कोविड–19 का देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा असर देखने को मिला है, और इसका प्रभाव आने वाले कई वर्षों तक पडने वाला है, सरकार को चाहिए कि वह लोगों की मांग को बरकरार रखने के लिए ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक खर्च में बढ़ोतरी करें, हमारे देश को अब आर्थिक सिद्धांतों की नवीन रचना करनी चाहिए। अर्थशास्त्र में अब बड़े बदलाव की आवश्यकता है, जिससे भविष्य में इस प्रकार की महामारी का हमारी अर्थव्यवस्था पर ज्यादा नकारात्मक प्रभाव ना पड़े फिलहाल लघु, मध्यम व छोटे उद्योगों के संरक्षण हेतु विशेष प्रयास करने चाहिए, जिससे कि वह बंद ना हो क्योंकि रोजगार के अधिकतर अवसर यही उपलब्ध होते हैं। इन्हें सब्सिडी युक्त ऋण उपलब्ध करवाई जाए, जीएसटी में अतिरिक्त छूट का प्रावधान किया जाना चाहिए। हमारे देश की तकनीक को उन्नत कर और प्रभावशाली बनाई जाए, जिससे डिजिटल अर्थव्यवस्था की संकल्पना पूर्ण हो सके। रोजगार के नए–नए आयाम विकसित किए जाने चाहिए। आमजन को आसान ऋण उपलब्ध कराकर उन्हें अपना व्यवसाय खोलने में मदद की जानी चाहिए। नवाचार को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा दिया जाना चाहिए। स्टार्टअप यदि कोई करना चाहता है तो, उसे ऋण से लेकर परामर्श तक की सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। डिजिटाइजेशन के युग में आमजन को इससे होने वाली हानि के प्रति सुरक्षा प्रदान करने हेतु उचित कानून का निर्माण किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

कोविड–19 का हमारे देश की अर्थव्यवस्था के प्रत्येक पक्ष पर इसका प्रभाव देखने को मिला है। कृषि व ग्रामीण क्षेत्र को छोड़कर प्रत्येक क्षेत्र में गिरावट देखने को मिली है। हमें इससे यह सीखने को मिला है कि, भविष्य में अगर इस प्रकार की महामारी यदि पुनः आती है तो, हमें उसके लिए किस प्रकार तैयारी करनी होगी, अपनी कमजोरियों को दुरस्त कर एक उच्च दक्षता वाली अर्थव्यवस्था का किस प्रकार निर्माण करना है। वर्तमान में आमजन की मांग को बरकरार रखना ही सर्वप्रथम ध्येय सरकार का होना चाहिए। हमें हमारे अर्थशास्त्र के नियमों, सिद्धांतों में बदलाव की अत्यंत आवश्यकता महसूस हुई है। हमारे देश में शोध पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। गरीबी, बेरोजगारी, असंगठित श्रमिक आदि का विशेष रूप से निवारण करने की आवश्यकता है। डिजिटल अर्थव्यवस्था का होना हमारे देश के लिए बहुत हितकारी सिद्ध हो सकता है, शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में डिजिटाइजेशन सराहनीय रहा है। अर्थव्यवस्था में V आकार की रिकवरी हमें अभिप्रेरित करने का कार्य कर रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Agrawal,T.(2014). Education inequality in rural and urban india. International journal of Educational Development, 34, 11-19
2. Business Today (2020), Covid-19 impact. Available at https://www.businesstoday.in/current/economy-to-draw-zero-salary-top brass-to-take-50-cut/story/399281.html
3. Dev, S. Mahendra (2020). COVID-19: Impact on the indian Economy, WP- 2020-013
4. Kantammneni, N.(2020). The impact of the COVID-19 pandemic on marginalized populations
5. Mohanty(2020). Online education in Pandemic: Where student climb mountains to cross internet hurdle. Odisha tv.in, August 06. Retrieved from https://odishatv.in//odisha-student-climb-mountains-to-cross-internet-hurdle-467388
6. mohanty, Mahendra(2020). COVID-19: Impact on the indian Economy, wp-2020-13
7. Saini, S.(2020). COVID-19 may double poverty in india financial Express. Available at https://www.financialexpress.com/opinion/COVID-19-may-double-poverty-in-india/1943736/(Accessed may 22,2020)
8. Sunil, (2020). Impact of coronavirus (COVID-19) on indian economy agriculture & food: e-Newsletter volume 2-Issue-April 2020 www.agrifoodmagazine.co.in ISSN: 2581-8317

Websites

9. https://en.wikipedia.org/wiki/Economic Impact of the COVID-19Pandemic in india (7th May 2020)
10. https://www.worldometersinfo/coronavirus/?Tum
11. www.COVID-19india.org

❖◆❖